International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 28-10-2020; Accepted: 13-11-2020; Published: 30-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 102-104

'सेवासदन' मे नारी विमर्श का दर्शन

डॉ. संतोष रामचंद्र आडे
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
सेवासदन' उपन्यास द्वारा नारी जाति की परवशता, निस्सहाय अवस्था, आर्थिक एवं शैक्षिक परतंत्रत, अर्थात नारी दुर्दशा पर आज के हिंदी साहित्य में जितनी मुखर चर्चा हो रही है, बीसवी सदी के प्रारंभ में कथा सम्राट प्रेमचंद के साहित्य में ज्यादा मुखर थी। नारी जीवन की समस्याओं के साथ–साथ समाज में धर्माचार्यों, मठाधीशों, सुधारकों के आडंबर, दंभ, ढोंग, पाखंड, चरित्रहीनता, दहेज–प्रथा, बेमेल विवाह, पुलिस की घुसखोरी, वेश्यागमन, मनुष्य के दोहरे चरित्र, साम्प्रदायिक द्वेष आदि सामाजिक विकृतियों के घृणित विवरणों से भरा उपन्यास "सेवासदन" आज भी समकालीन और प्रासांगिक बना हुआ है। इन तमाम विकृतियों के साथ–साथ यह उपन्यास घनघोर दानवता के बीच कहीं मानवता का अनुसंधान करता है। अतिरिक्त सुखभोग की अपेक्षा में अपना सर्वस्व गवॉ लेने के बाद जब कथानायिका को सामाजिक गुणसूत्रों की समझ हो जाती है, तब वह किसी तरह दुनिया के प्रति उदार हो जाती है और उसका पति साधु बनकर अपने व्यक्तित्व दुष्कर्मो का प्रायश्चित करने लगता है, जमींदारी अहंकार में डूबे दंपति अपनी तीसरी पीढ़ी की संतान के जन्म से प्रसन्न होते है, और अपनी सारी कटुताओं को भूल जाते है। ये सारी स्थितियॉ उपन्यास की कथाभूमि में इस तरह पिरोई हुई है कि तत्कालिन समाज की सभी अच्छाइयों, बुराइयों का जीवंत चित्र सामने आ जाता है. हर दष्टि से यह उपन्यास एक धरोहर है और आज के नारी जीवन से प्रमाणित करता हुआ नजर आता है, इसलिए यह उपन्यास आज भी प्रासांगिक लगता है

मूल शब्द: 'सेवासदन', नारी विमर्श, नारी जाति

प्रस्तावना
'सेवासदन' उपन्यास द्वारा लेखक ने भारतीय नारी जाति की निस्सहाय अवस्था, आर्थिक एवं शैक्षणिक परतंत्रता का अत्यंत निर्ममता एवंम वीभत्सता के साथ चित्रण किया गया है। नारी जीवन की विविध समस्याओं के साथ–साथ धर्माचार्यों, सुधारको के आडंबर, ढोंग, पाखंड, चरित्रहीनता, दहेज–प्रथा, बेमेल विवाह, वेश्यावृत्ति, खोखले मान–सम्मान की रक्षा के लिए परिवार की तबाही, साम्प्रदायिकता द्वेष आदि सामाजिक विकृतियों का वर्णन इस उपन्यास में जगह–जगह पर देखने को मिलता है। उपन्यास की नायिका सुमन समाज के इसी द्वेष के कारण जीवन–भर संघर्ष करती नजर आती है। प्रेमचंद ने समाज के सामने इस तथ्य को उजागर किया कि घृणा की पात्र सुमन नहीं वरन हमारा समाज ही है, जिसने उसे वेश्या बनने के लिए बाध्य किया। संपूर्ण उपन्यास सुमन के ईद–गिर्द घूमता है। प्रेमचंद ने सुमन के स्वभाव का वर्णन इस प्रकार किया है–"बड़ी लड़की सुमन सुंदर, चंचल और अभिमानी थी। छोटी लड़की शांता भोल, गंभीर, सुशील थी। सुमन दूसरों से बढ़कर रहना चाहती थी। यदि बाजार से दोनों बहनों के लिए एक ही प्रकार की साड़ियॉ आती तो सुमन मुँह चढाकर बैठ जाती थी।" [1]

19 वीं शती के उत्तरार्ध और बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में स्त्री यौनिकता के प्रश्न पर भारतीय लेखकों के रवैये की पड़ताल करने के प्रयास के साथ ही उर्दू और बांग्ला में प्रेमचंद के समकालीन रचनाकारों के स्त्री संबंधी रुझान का विश्लेषण भी इसमें अंतर्गुम्फित है। इसमें 'सेवासदन' के उर्दू और हिंदी संस्करणों की तुलना का भी प्रयास किया गया है। स्त्री की चेतना का निर्माण न केवल जैविकता और दैनंदिन जीवन की स्थितियाँ करती हैंए बल्कि उसकी चेतना के निर्माण में श्सामुदायिकताश् की भूमिका प्रमुख होती है। अपने समुदाय में उनके कुछ आदर्श होते हैं। ऐसे तमाम संरचनात्मक अवसरए जो स्त्री को स्त्री होने के कारण मिलते हैं। वे परिवार, समाज और समुदाय के अंतर्गत ही उन्हें उपलब्ध होते हैं। इन्हीं से स्त्रियों की अंतयातना का निर्माण होता है, जिनके आधार पर वे अपनी जटिल पहचान को स्थापित करती हैं और किसी आदर्श या कर्तव्य के निर्वहण के लिए तत्पर होती हैं। लेकिन यह चेतना भी उनमें तभी आती है जब उन्हें एक वर्ग विशेष, समुदाय अथवा राष्ट्र के सदस्य के नाते एक वृहत्तर संस्कृति का अंग होने का अहसास हो।

सुमन के पिता अपनी दोनों बेटियों से बहुत प्यार करते थे। उन्होंने अपने दोनों बेटियों को किसी चीज की कभी कमी नहीं होने दी। जब सुमन के विवाह की बात चली और वर पक्ष की ओर से दहेज की मॉग सुनकर वे हिम्मत हार बैठते थे, क्योंकि इतना दहेज देने का सामर्थ्य उनमें नहीं था और दहेज समाज में ऐसा रोग था जो कम होने की बजाय निरंतर बढता ही जा रहा था। दहेज की रक्कम चुकाने में सक्षम न हो पाने के कारण एक ईमानदार पिता को आपना ईमान तक बेचना पड़ा, क्योकि शिक्षित सज्जनों से शादी करने को तैयार नहीं था । एक व्यक्ति ने उनके पिता से यह कह दिया कि "महाशय, मैं स्वंय इस कुप्रथा का जानी दुश्मन हूँ । लेकिन करू क्या अभी पिछले साल लड़की का विवाह किया, दो हजार रुपये केवल दहेज में देने पड़े, दो हजार खाने–पीने में खर्च पड़े, आप ही कहिए, यह कमी कैसे पूरी हो ।" [2] इस तरह दहेज के लोभ को पूरा करने के चक्कर में उसके पिता को रिश्वत लेना पड़ा और इसका भेद खुलने पर उन्हें जेल जाना पड़ा ।

'सेवासदन' की नायिका सुमन का विवा गरीब गजाधर प्रसाद से कर दिया जाता है। बेमेल विवाह और गरीबी के कारण पति–पत्नी के रिश्तों में मन–मुटाव शुरू हो जाता है और एक रात अपनी सहेली सुभद्रा के घर से आने में देरी होने के कारण संकीर्ण मनोवृति वाले पति द्वारा निष्कासन मिला। सुमन ने अपने पति को समझाने की बहुत कोशिश की पर उसका पति उसकी कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं था, इतना ही नहीं वह उसका

नाम उसकी सहेली के पति पदमसिंह से जोड़कर उसके चरित्र पर लांछन लगाने लगा। गजाधर के शब्दों मे–"चल छोकरी, मुझे न चरा, ऐसे–ऐसे कितने भले आदमियों को देख चुका हूँ। वह देवता हैं, उन्हीं के पास जा। यह झोपड़ी तेरे रहने योग्य नहीं हैं। तेरे हौसले बढ़ रहे हैं। अब तेरा गुजारा यहॉ न होगा।" [3]

यहॉ उपन्यास हमें यह सोचने को विवश कर देता है कि सुमन को वेश्या बनने के लिए आखिर जिम्मेदार कौन है –क्या वह समाज जहॉ वह जन्मी और उसने अपने यौवन की दहलीज पर पॉव रखा। पदमसिंह इस समस्या के लिए उत्तरदायी मध्यवर्गीय समाज को मानते है। उपन्यास का एक पात्र अनिरूध्द सिंह इसका दोष शिक्षित मध्यवर्ग को ही मानता है –"हमारे शिक्षित भाईयों की बदौलत दालमण्डी आबाद है, चौक में चहल पहल है, चकलों में रौनक है ध –वह मीना बाजार हम लोगों ने ही सजाया हैं।" [4]

सुमन विठठलदास से कहती है कि वह भी यह सब छोड़ना चाहती है, पर उसका जीवन निर्वाह किस प्रकार होगा, उसे इसके बारे में भी सोचना होगा। जीवन में ठोकर खाने के बाद अब वह सच्चई को समझने लगी है। वह वेश्यावृत्ति को तृष्णा सागर कहती है।–"यहॉ तो अंधे आते है या बातों के वीर। कोई अपने धन जाल बिछाता है, कोई अपनी चिकनी चुपड़ी बातों का। उनके–हदय भाव–शून्य,शुष्क और ओछेपन से भरे हुए होते है।" [5] दालमंड़ी का त्याग करते हुए उसे यह भी ज्ञात हो जाता है कि प्रेम का आधार त्याग ही है। अंततः वह यह निश्चय करती है कि स्वार्थ रहित प्रेम की बजाय वह अपने प्रेमी की यादों को दिल में समेट रखेगी। वह सदन को बिना बताए दालमण्डी छोड़ने का पैसला कर लेती है।

प्रेमचंद ने इस प्रसंग के माध्यम से समाज को यह समझाने की कोशिश की है, जिस धर्म के नाम पर सुमन के पिता ने आत्महत्या की, क्या यह वही धर्म है जिसने सुमन को वेश्या बनने पर मजबूर कर दिया, सुमन की बहन शांता उसके साथ विधवाश्रम में रहने लगती है, पर दोनो वहॉ ज्यादा दिनों तक नहीं रह पाते और रातों–रात उन्हें आश्रम छोडनें के लिए मजबूर होना पड़ता है। उन्हें रास्ते में सदन मिल जाता है जो दोनों बहनों को अपने साथ रहने का आग्रह करता है। वह शांता को भी अपना लेता है, जिसे उसने समाज के आडम्बरों के कारण छोड़ दिया था। पर समय के साथ–साथ सदन और शांता के स्वभाव में बदलाव आने लगा था। "सदन इस प्रकार सुमन से बचता था, जैसे हम कुष्ठ रोगी से बचते है, उस पर दय करते हुए भी उसके समीप जाने की हिम्मत नहीं रखते। शांता उस पर विश्वास करती थी, उसके रूप लावण्य से डरती थी। कुशल यही थी कि सदन स्वंय सुमन से ऑखे चुराता था, नहीं तो शांता इससे जल ही जाती। लेकिन संकोचवश वह आपस में इस विषय का छेड़ने से डरते थे।" [6] सुमन खुद अपनी बहन के घर भरस्वरुप नहीं रहना चाहती थी, उसके घर में रहने का कारण केवल बहन के प्रति मंगल भाव था। वह सुमन को जीवन के महत्व के बारे में बताता है और उसे समझाता है कि गलती उसकी पिता ने की थी, वहीं गलती वह न करें। गजाधर प्रसाद के यह वाक्य–"अब तक तुम अपने लिए जीती थी अब दूसरों के लिए जियों।" [7] सुमन के जीवन को इस वाक्य से नई दिशा मिल जाती है, वह सेवासदन में अवैध बच्चों को शिक्षा देने का कार्यभार सँभालकर अपना पूरा जीवन सेवाभावना में समर्पित कर देती है। सुमन उपन्यास के अंत तक आते–आते हर भारतीय नारीके लिए यह संदेश छोडती है कि जिंदगी कॉटों से भरी जरूर है, पर संघर्ष और प्रयास द्वारा नई खुशहाल जिंदगी की पहल की जा सकती है।

'सेवासदन' का मुख्य कथानक है स्त्रीत्व के आदर्श से सुमन का पतन और उसके पुनः उत्थान का प्रयास रहा है। उधर 'उमरावजान का कथानक तवायफों के जीवन के अंदरूनी कार्यव्यापार, बाजार में बैठी स्त्री की तहज़ीब, रचनात्मक रुझानों और लोकप्रियता के व्याज से अपने समय.समाज से निर्मित हुआ है। 'सेवासदन' में प्रेमचंद सुमन से सुमनबाई बन जाने वाली स्त्री के पतन की कहानी सुनाते हैं और 'उमराव जान अदा' में हादी रुसवा अमीरन से उमराव बनी रेख्ती कहने वाली तवायफ की कहानी सुनाते, ;इसकी जगह सुनते होगा हैं। 'सेवासदन' के छपते–छपते मिर्ज़ा हादी के उपन्यास को बीस वर्ष बीत चुके थे और इन बीस वर्षों का अंतराल उत्तर भारत में आ रहे बहुत से सांस्कृतिक. सामाजिक बदलावों और आहटों का अंतराल है।

प्रेमचंद अपने विचारों में सुदृढ़ है, वे परंपराओं की आलोचना तो करते हैं लेकिन सुमन जैसी स्त्री जो परंपरागत खॉंचे में नहीं आती, उसकी तवालत और मुसीबतों को खूब बढ़ा चढ़ा कर चित्रित करते हैं, वे मेटा.लिटरेरी फंक्शन के तहत काम करते हैं, समाज सुधारकों का यथार्थ, जीवन की बहुस्तरीयता, स्त्री की बेचैनी, स्वातंत्र्य की पिपासा और अंत में विवश होकर सत्पथ की ओर लौट कर लाना उनके अंतर्द्वंद्व को भी दर्शाता है।

प्रेमचंद के 'सेवासदन' की तर्ज पर रोहिणी से यह अपेक्षा की जाती है कि स्त्री अपनी यौनिकता और भौतिक सुखों के बारे में न सोचे, सोचे तो सिर्फ यही कि अगले जन्म में पति पाने के लिए इस जन्म में कष्ट करना जरूरी है। और सुमन जैसी स्त्री को अपने चरित्र में सुधार के लिए विधवाश्रम रहना तजवीज किया जाता है। जिसमें विधवा पुनर्विवाह की वकालत की गई ताकि उनकी स्थिति में सुधार हो सके। शरतचंद्र के 'चरित्रहीन' की नायिका बाल–विधवा है। अपने प्रेमी सतीश से गहरा आतंरिक जुड़ाव होने के बावजूद वह पुनर्विवाह के लिए तैयार नहीं होती। उसे मालूम है कि सभ्य समाज इस संबंध को स्वीकृति नहीं देगा। वह अपने पक्ष में नहीं खड़ी होती। वह पुरुष के पक्ष में खड़ी होकर आत्मोत्सर्ग से पाठक की अप्रतिम सहानुभूति अर्जित कर लेती है और पाठक भावात्मक रूप से विधवा–पुनर्विवाह के पक्ष मे खड़ा हो जाता है।

'सेवासदन' को देखें तो उसकी संरचना बिलकुल नगरीय है। सुमन की कामनाओं का पति से पूरा होना असंभव है। उसने खाता–पीता बचपन और कैशोर्य देखा है। दरोगा कृष्णचंद्र की गिरफ्तारी से पूरे परिवार की आर्थिक संरचना तहस–नहस हो जाती है। सावधानीपूर्वक कम खर्च में जीने का जो उपदेश लाला श्रीनिवासदास 'परीक्षागुरु' में दे रहे थे उसी तर्ज पर 'सेवासदन' में असावधान जीवन के व्यावहारिक पक्ष का यथार्थ चित्रण है। कृष्णचंद्र पत्नी की बात नहीं मानते। गंगाजली चतुर स्त्री थी। उन्हें समझाया करती कि जरा हाथ रोककर खर्च करो। जीवन में यदि और कुछ नहीं करना है तो लड़कियों का विवाह तो करना ही पड़ेगा। उस समय किसके सामने हाथ फैलाते फिरोग... दारोगाजी इन बातों को हँसी में उड़ा देते।" [8] रिश्वत लेकर दरोगाजी फँस जाते हैं और उधर अनमेल विवाह होता है सुमन का और वो भी गरीब घर में। अब ये हिंदू गृहिणी की मर्यादा का तकाजा है कि वह कम खर्च में बिना प्रश्न किए गृहस्थी चलाए, पर्दे और घूँघट में ढकी रहे, सभी दुनिया की इच्छाओं को कुचल दे। सुमन ऐसा नहीं कर सकी।

नैतिकता का यही दबाव प्रेमचंद को उपन्यास का शीर्षक 'सेवासदन' रखने के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही स्त्री यौनिकता शुरू से ही समाज सुधारकों को चुनौती दे रही थी। रुसवा समाज सुधार का एजेंडा लेकर 'उमराव जान अदा' नहीं लिख रहे थे लेकिन यही बात प्रेमचंद के बारे में नहीं कही जा सकती। चारु गुप्ता का कहना सही है कि .इन सभी कोशिशों के बावजूद सामूहिक धार्मिक पहचान और उस पर बनाई गई पितृसत्ता अस्थिर थी। उदाहरण के लिए, सम्मान हासिल करने की सारी ललक अपने आप में तनाव का स्रोत थी। अंतरजातीय विवाह बेहद तीखे द्वंद्व का मुद्दा था। "हिंदू एकता कई तरह की कृत्रिमताओं पर टिकी हुई थीए जो कभी भी डाँवाडोल हो सकती

थी। इसके अलावा तमाम नियमों के बावजूद कुछ मध्यवर्गीय महिलाओं, विशेषकर कई निम्नजातीय स्त्रियों, विधवाओं और वेश्याओं ने नए ढाँचे को ठुकराया।" [9] सुमन पितृसत्ता के परंपरागत ढाँचे में से निकलने का प्रयास करती है।

प्रेमचंद स्त्री को लेकर बड़े कश्मकश से गुजरते हैं कुछ नहीं समझ आता तो वर्षों के खोए पति और अब संन्यास ले चुके गजाधर से मिला देते हैं। अब सुमन को उस अनाथ आश्रम में पचास कन्याओं की देखभाल करनी होगी जो वेश्याओं की संताने हैं ."इस अनाथालय के लिए एक पवित्र आत्मा की आवश्यकता है और तुम्हीं वह आत्मा हो। मैंने बहुत ढूँढ़ा पर ऐसी कोई महिला न मिली जो इस काम को सेवा, प्रेम भाव से करे, जो कन्याओं का माता की भाँति पालन करे और अपने प्रेम से अकेली उनकी माताओं का स्थान पूरा कर दे।" [10] ये स्त्री की आदर्श छवि थी जिसकी सिद्धि के लिए पूरा कथा.वितान रचा गयाए अपने समय के कई राष्ट्रवादियों की तरह वे पढ़ी–लिखी स्त्री को सामने लाए। सुमन या रोहिणी जैसे चरित्र राष्ट्रवादी रुझान के लिए पूरी तरह फिट बैठती हैं जो अपनी करुणा, दयालुता, सहजता, निर्धनता, की वजह से लंबे समय तक कष्ट झेलती हैं, चाहे वे पत्नियाँ हों, विधवाएँ, तवायफें हों, वे किसी भी जाति की हों उन्हें पाठक की दया का पात्र बना दिया जाता है, जिनमें सुधार की आवश्यकता अनिवार्यतः होती है।

सांराश

प्रेमचंद समाज की गतिविधियों को शब्द और संवाद ही नहीं देते बल्कि उसमें दखल भी देते हैं। स्त्री और पुरुष का अपनी यौनेच्छाओं पर विजय पाकर समाज हित साधन बन जाना उनके युग की माँग थीए युग के हिंदू राष्ट्रवादी एजेंडे को पूरा करने में सहयोगी थी। भारतीय विवाह संस्था का क्रिटीक भी प्रेमचंद बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत करते हैंए जो सामाजिक कुप्रथाओं के कारण दांपत्य में बेड़ी का काम करता है। सुमन के द्वारा विद्रोह की कोशिश विवाह संस्था के रूढ़िवादी स्वरूप का नकार है। जब व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास के अवसर अनुपलब्ध हों तो अनमेल विवाह के शिकार स्त्री–पुरुष स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान नहीं कर सकते।

अंततः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद एक सच्चे समाज सुधारक और संवेदनशील उपन्यासकार थे। नारी के प्रति उनके मन में अपार श्रध्दा थी । समाज में उपेक्षित, अपमानीत और पतिता स्त्रियों के प्रति उनका हदय सदा सहानुभूति से परिपूर्ण रहा है । प्रेमचंद ने जहॉ एक और नारी की सामाजिक पराधीनता उसके पलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं को अपने इस उपन्यास में अभिव्यक्ति प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर यह भी दिखलाया है कि किस प्रकार उनके नारी पात्र उपन्यास के अंत तक आते–आते सामाजिक अन्याय से मुक्ति पाने का मार्ग स्वंय ही खोज देते है कठिन से कठिन परिस्थितीयों में भी वे उठने का साहस रखते हैं।

संदर्भ

1. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007 पृ. 6
2. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007 पृ. 7
3. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007 पृ. 35
4. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007. पृ. 192
5. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007 पृ. 72
6. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007. पृ. 227
7. प्रेमचंद, सेवासदन, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2007. पृ. 185
8. सेवासदन, प्रेमचंद, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, द्वि. सं. 2013. पृ.08
9. अलीगढ़ इंस्टिटयूट गजट, 8 जुलाई 1870, न्युजपेपर रिपोर्ट ऑप यू पी, 1870. पृ.271
10. राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, 2006. पृ. 84